# मेघ भले ही रंग के काले हैं

मेघ भले ही होते रंग के काले हैं।
पर दिल के होते भोले भाले हैं।

बंूद-बूंद धरा पर गिरा जाते जब
मोतियों जैसे कीमती पावस पानी।
तब धरती की अंगड़ाई है लिखती
जीवन जगत रस-भरी कहानी।

उमड़-घुमड़ कर जब ये बादल
ले आता भर-भर सागर का जल।
तब धरती से अम्बर तक
चलता है जीवन चक्र चला-चल

धरती की सौगंध है इनको
प्यास धरा की देखी नहीं जाती।
पेड़ों की पत्तियाँ हो या कलियाँ
देख इनको सब पुलकित हो जाती।

कभी-कभी जोरों की गर्जन करते जरूर
पर देवतुल्य है ये, नहीं रखते मन में गुरुर।
इनका तो सागर से नाता है
नदी नाले हो या पहाड़ सब कुछ इनको भाता है।

ऐसे देवतुल्य बादल का सम्मान करो
यह बादल होते बड़े निराले हैं।
भले ही रंग के होते यह काले हैं
पर दिल के होते भोले भाले हैं।

तेज नारायण राय